

I. उत्पादन (आउटपुट)

चूंकि धीमेपन ने सेवा क्षेत्र को भी जकड़ लिया जो कि भारत की उच्च वृद्धि का मुख्य सहारा था इसलिए 2012-13 की तीसरी तिमाही में वृद्धि में और आगे गिरावट आई। खनन तथा विनिर्माण कार्य तो जैसे रुक ही गए और मानसून की कम वर्षा से कृषि उत्पादन पर भी असर पड़ा। घरेलू नीति की अनिश्चितताओं, धीमी बाह्य मांग और पहले की मुद्रा-नीति के असर ने वृद्धि को घटाया। वैश्विक वृद्धि 2012 के दौरान गिरी और 2013 के दौरान भी इसके कमजोर ही रहने की आशा है। चूंकि कारोबारी माहौल कमजोर बना हुआ है और संरचनात्मक रुकावटें अभी भी कार्यस्तरों को रोके हुए हैं, इसलिए, 2013-14 के दौरान बहाली धीमी ही रहने की उम्मीद है।

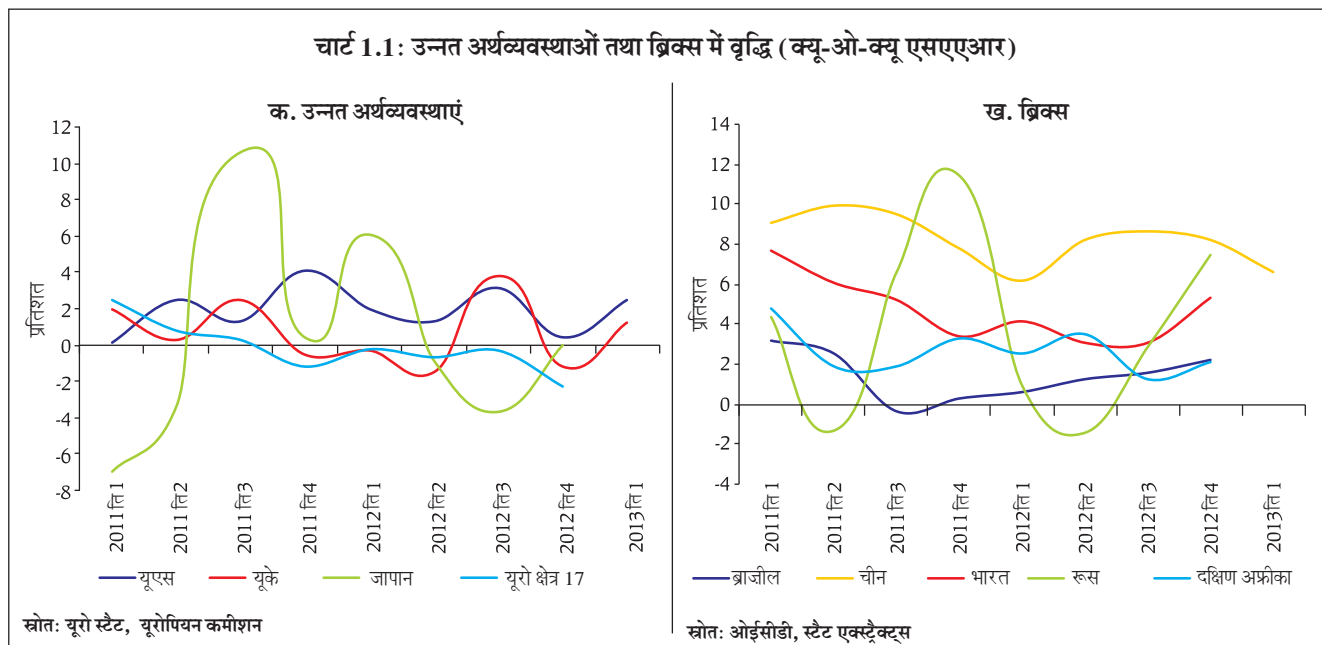
वैश्विक वृद्धि 2013 में कमजोर रहने की आशंका

1.1 वैश्विक वृद्धि 2012 में और भी कमजोर हुई क्योंकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में धीमी बाहरी मांग ने उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में वृद्धि पर प्रतिकूल असर डाला। 2013 में गतिविधि स्तर कमजोर ही बने रहेंगे क्योंकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में राजकोषीय समायोजन वृद्धि को पीछे खींचेंगे और परिणामस्वरूप ईएमडीई में चक्रिक बहाली में देरी होगी।

1.2 अप्रैल 2013 के अपने विश्व आर्थिक आउटलुक (डब्ल्यूईओ) अ.मु.कोष ने 2013 में वैश्विक वृद्धि 3.3 प्रतिशत पर रहने का अनुमान किया था जो जनवरी 2013 के इसके प्रोजेक्शन-ज से 0.2 प्रतिशतता बिंदु नीचे था। आईएमएफ की प्रत्याशा है कि अमरीका में बहाली अनुमानतः तेज होने से सुदृढ़ता आएगी और 2014 में वैश्विक वृद्धि 4.0 प्रतिशत का स्तर पकड़ सकती है।

1.3 हाल की जानकारी बताती है हालांकि 2013 की पहली तिमाही में कुछ सुधार हुआ फिर भी वैश्विक वृद्धि धीमी ही बनी हुई है। अमरीका में वृद्धि 2012 की चौथी तिमाही के 0.4 प्रतिशत से बढ़कर 2013 की पहली तिमाही में 2.5 प्रतिशत पर आई (सीजनली समायोजित वार्षिकीकृत तिमाही-दर-तिमाही वृद्धि दर, क्यूओक्यू सार) फिर भी यह बाजार की आशाओं से कम थी। दो तिमाहियों में संकुचन के बाद 2012 की चौथी तिमाही में जापान की जीडीपी फ्लैट बनी रही। यूरो क्षेत्र संकुचन रूप में बना रहा और संकुचन की यह गति तीसरी तिमाही की 0.3 प्रतिशत से बढ़कर 2012 की चौथी तिमाही में 2.3 प्रतिशत (क्यू-ओ-क्यू सार) हो गई (चार्ट-1.1ए)। यूके 2013 की पहली तिमाही में तिहरी डिप मंदी से बाल-बाल बचा और 2012 की चौथी तिमाही में 1.2 प्रतिशत की सिकुड़न के बाद 1.2 प्रतिशत (क्यू-ओ-क्यू सार) का विस्तार प्रदर्शित किया।

चार्ट 1.1: उन्नत अर्थव्यवस्थाओं तथा ब्रिक्स में वृद्धि (क्यू-ओ-क्यू एसएएआर)



1.4 अमरीका में बजट पृथक्कीकरण के कारण वृद्धि और रोजगार की जो हानि होगी उससे 2013 के दौरान वैश्विक अर्थव्यवस्था विस्तार में धीमापन आएगा। अमरीकी कांग्रेस बजट कार्यालय के अनुसार राजकोषीय कड़ाई 2013 में अमरीकी जीडीपी वृद्धि से लगभग 1.5 प्रतिशतता बिंदु नॉक आउट करेगी।

1.5 अमरीकी अर्थव्यवस्था में, जॉब में हुई वृद्धियों ने बेरोजगारी दर को मार्च 2013 में 7.6 प्रतिशत के चार वर्ष के सबसे नीचे के स्तर पर ला दिया है जबकि फरवरी 2013 में यूरो क्षेत्र की बेरोजगारी दर 12 प्रतिशत के रिकार्ड स्तर पर बनी हुई है।

1.6 चीनी अर्थव्यवस्था के नीचे जाने से वैश्विक बहाली के खतरे बढ़ गए हैं। 2012 में चीन में वृद्धि 7.8 प्रतिशत थी जो 2013 की पहली तिमाही में घटकर 6.6 प्रतिशत (क्यू-ओ-क्यू सार) पर आ गई है। ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका ने 2012 की चौथी तिमाही में अपनी जीडीपी वृद्धि में कुछ सुधार दिखाया है (चार्ट 1.1बी)।

1.7 धीमी वैश्विक वृद्धि के परिणामस्वरूप, विश्व व्यापार, अधिकांशतः, 2012 तथा 2013 में धीमा ही रहा (देखें अध्याय 3)।

भारतीय अर्थव्यवस्था में धीमापन बना हुआ है

1.8 2012-13 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था लगातार तीसरी तिमाही में भी धीमापन ही प्रदर्शित करती रही (तालिका 1.1)। 2008-09 की चौथी तिमाही की सबसे कम जीडीपी वृद्धि (3.5 प्रतिशत) 2012-13 की तीसरी तिमाही में जीडीपी की 4.5 प्रतिशत की वृद्धि के बाद की सबसे कम है। वृद्धि दर में गिरावट कृषि तथा सेवा क्षेत्रों में देखी गई जबकि औद्योगिक वृद्धि तो एकदम निर्जीव ही रही। कुल मिलाकर 2011-12 की दूसरी तिमाही से लेकर लगातार छः तिमाहियों में प्रवृत्ति से कम बनी रही (चार्ट 1.2) गतिशीलता संकेतक इस धीमेपन की गवाही देता है (चार्ट 1.3)।

1.9 जबकि कृषि की वृद्धि में धीमापन अधिकांशतः वर्षा की कमी के कारण आया, वहीं उद्योग तथा सेवाओं में मंदी के कई कारण परिलक्षित हुए, जिनमें घरेलू नीति की अनिश्चितताएं पहले की मौद्रिक कसावट का प्रभाव तथा बाहरी मांग का धीमापन शामिल है। पिछले वर्ष की तीसरी तिमाही के मुकाबले

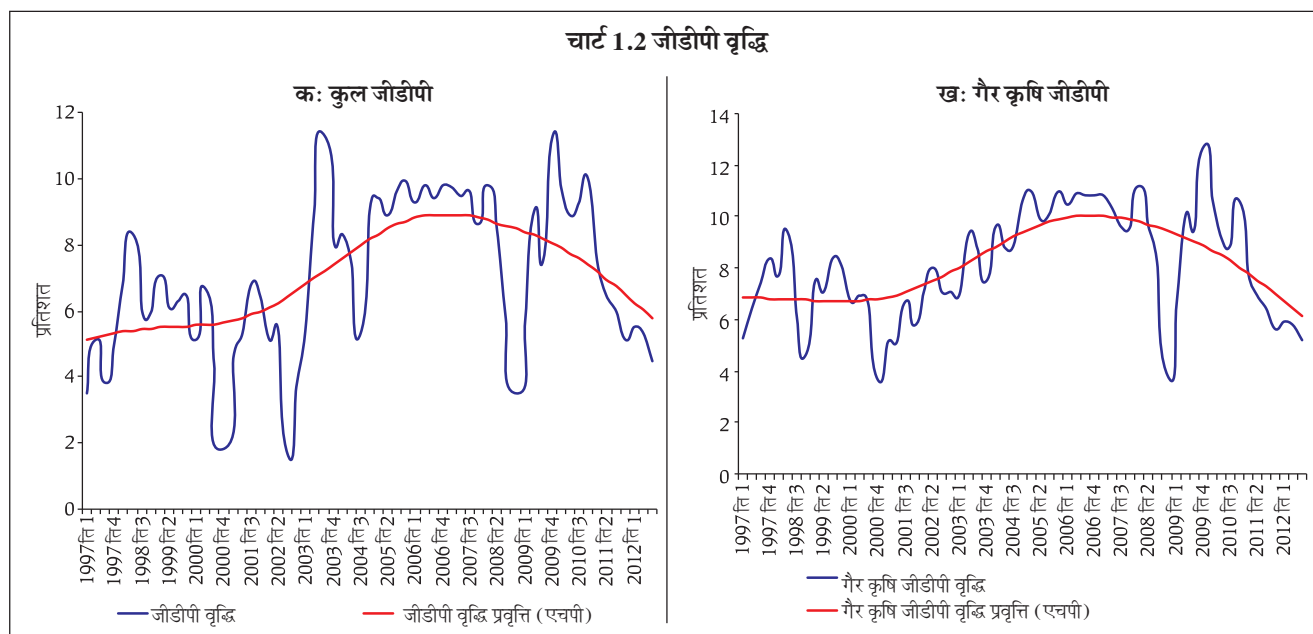
तालिका 1.1 : जीडीपी की सेक्टर-वार वृद्धि (2004-05 की कीमतों पर)

(प्रतिशत)

मद	2012-13 एई		2011-12				2012-13			अप्रैल-दिसंबर	
	हिस्सा	वृद्धि	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	2011-12	2012-13
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1. कृषि वानिकी और मत्स्य पालन	13.7	1.8	5.4	3.2	4.1	2.0	2.9	1.2	1.1	4.3	1.7
2. उद्योग	19.1	2.0	6.5	2.7	0.9	1.0	0.8	1.1	2.3	3.3	1.4
2.1 खनन और क्वैरिंग	2.0	0.4	-0.4	-5.3	-2.6	5.2	0.1	1.9	-1.4	-2.8	0.1
2.2 विनिर्माण	15.2	1.9	7.4	3.1	0.7	0.1	0.2	0.8	2.5	3.6	1.2
2.3 बिजली गैस और जलापूर्ति	1.9	4.9	6.6	8.4	7.7	3.5	6.3	3.4	4.5	7.6	4.7
3. सेवाएं	67.2	6.5	8.3	8.2	8.1	7.0	7.4	7.1	6.0	8.2	6.8
3.1 निर्माण	7.9	5.9	3.8	6.5	6.9	5.1	10.9	6.7	5.8	5.7	7.7
3.2 व्यापार, होटल ट्रांसपोर्ट, भंडारण तथा संचार	27.5	5.2	9.5	7.0	6.9	5.1	4.0	5.5	5.1	7.8	4.9
3.3 वित्त, बीमा, रीयल एस्टेट तथा कारोबार सेवाएं	18.7	8.6	11.6	12.3	11.4	11.3	10.8	9.4	7.9	11.8	9.4
3.4 सामुदायिक, सामाजिक तथा व्यक्तिगत सेवाएं	13.0	6.8	3.5	6.5	6.8	6.8	7.9	7.5	5.4	5.7	6.9
4. फैक्टर लागत पर जीडीपी	100.0	5.0	7.5	6.5	6.0	5.1	5.5	5.3	4.5	6.6	5.0

एई : अग्रिम अनुमान

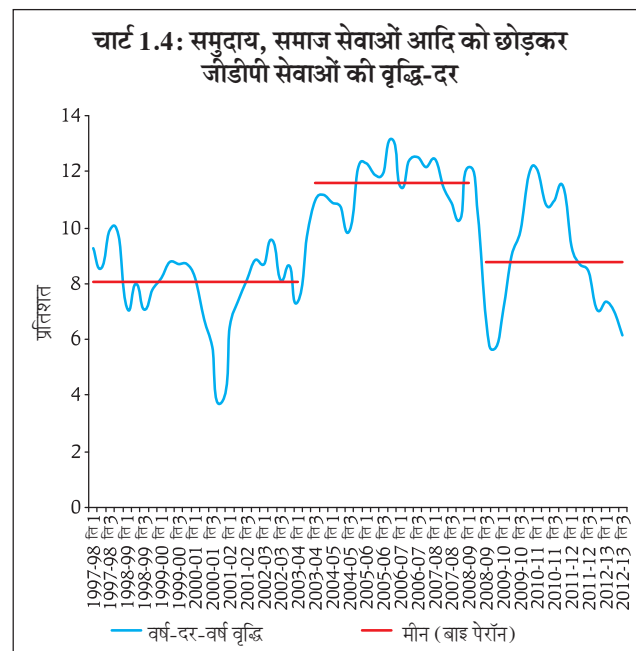
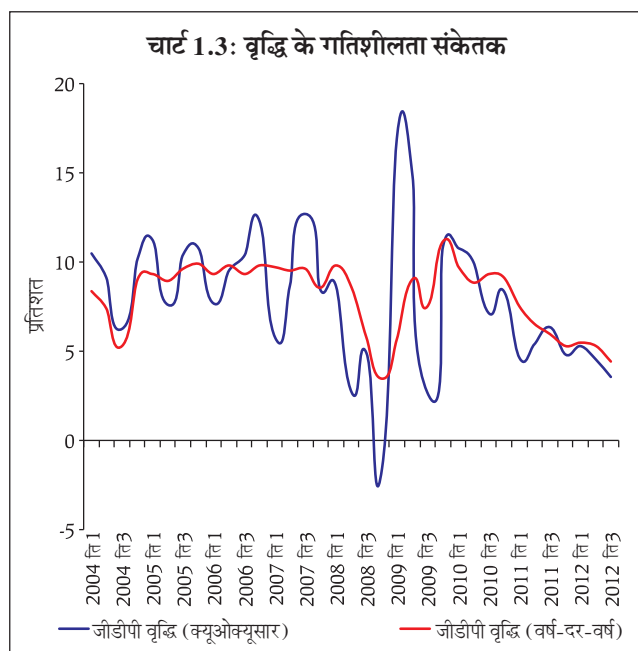
स्रोत : केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय।



2012-13 की तीसरी तिमाही में, सेवा क्षेत्र में तेजी से गिरावट, मुख्यतः व्यापार, होटल, ट्रांसपोर्ट तथा संचार तथा 'वित्त पोषण बीमा', रीयल एस्टेट तथा कारोबारी सेवाओं के अंतर्गत परिलक्षित हुई। ये उप-क्षेत्र, उद्योग तथा कृषि और साथ ही बाह्य क्षेत्र की गतिविधियों में धीमेपन के अनुरूप ही धीमे पड़े। क्षेत्र विशिष्ट समस्याओं, जैसे कि-संचार की समस्याओं ने, धीमेपन को और भी बढ़ाया।

1.10 सेवा क्षेत्र में धीमापन आना, जो भारत की उच्च वृद्धि का प्रमुख संचालक है, पर काफी ध्यान देने की जरूरत है।

1997-98 से 2012-13 की अवधि के दौरान सामुदायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवाओं को छोड़कर, सेवा क्षेत्र की तिमाही जीडीपी अपनी वृद्धि सीरीज़ में दो संरचनागत ब्रेक्स को इंगित करती है (चार्ट 1.4)। ये ब्रेक्स यह भी इंगित करते हैं कि 2008-09 की दूसरी तिमाही से शुरू होकर सेवा क्षेत्र में इस समय जो धीमापन आया है, उसने, इस सेक्टर की औसत वृद्धि को नीचे खींच कर 2003-04 की दूसरी तिमाही से पहले के स्तर पर ही लगभग ला खड़ा किया है। रेलवेज तथा निर्माण गतिविधि को छोड़कर, व्यापार, दूर संचार तथा



तालिका 1.2: कृषि उत्पादन - 2012-13

(मिलियन टन)

फसल	2011-12 अंतिम अनुमान	2012-13 द्वितीय अग्रिम अनुमान	प्रतिशतता बदलाव 2012-13
1	2	3	4
खाद्यान्न	259.3	250.1	-3.5
चावल	105.3	101.8	-3.3
गेहूँ	94.9	92.3	-2.7
मोटे अनाज	42.0	38.5	-8.3
दलहन	17.1	17.6	2.9
तिलहन	3.0	2.9	-3.3
कपास #	3.5	3.4	-2.9
जूट और मेस्टा ##	1.1	1.1	0.0
गन्ना (केन)	36.1	33.5	-7.2

#: 170 किग्रा प्रत्येक की मिलियन गांठें

##: 180 किग्रा प्रत्येक की मिलियन गांठें

परिवहन जैसी गतिविधियों पर वर्तमान चक्र का खास तौर से असर पड़ा है।

वर्षा की कमी से असर पड़ा कृषि उत्पादन पर

1.11 जुलाई-अगस्त 2012 के दौरान कम और असमान वर्षा ने 2012 में खरीफ की बुआई पर असर डाला तथा खाद्यान्नों और वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन पर भी इसका असर पड़ा। सितंबर के बाद हुई वर्षा ने रबी सीजन के दौरान जमीन में नमी को बनाए रखने में मदद की। रबी तिलहनों तथा मोटे अनाज के उत्पादन में सुधार आया है और 2012-13 के दौरान रबी

दलहनों में रिकॉर्ड उत्पादन होने की आशा है तथापि 2012-13 में गेहूँ के उत्पादन में गिरावट की आशा है जिसका मुख्य कारण इस फसल के अंतर्गत बुवाई का कम क्षेत्र शामिल होना था। 2012-13 के दौरान खाद्यान्नों के उत्पादन में गिरावट केवल 3.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

1.12 खाद्यान्नों का वर्तमान भंडार (मार्च 2013 के अंत में 59.7 मिलियन टन) बफर मानदंडों तथा विभिन्न गरीबी उन्मूलन योजनाओं की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त है। जिस गति से खाद्यान्न भंडार बन रहे हैं, अर्थात् गत पाँच वर्षों में लगभग 27 प्रतिशत प्रति वर्ष, अनाज मुद्रास्फीति को कमजोर करने के लिए खाद्य स्टॉक के बेहतर प्रबंधन की जरूरत है।

औद्योगिक वृद्धि ठहराव पर है परंतु इसमें आगे सुधार आ सकता है

1.13 औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) की वृद्धि में अप्रैल-फरवरी 2012-13 में 0.9 प्रतिशत की मंदी आई जिसका मुख्य कारण इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा इनपुट कठिनाइयाँ, बढ़ती लागतें, तथा बाह्य मांग में मंदी थी (तालिका 1.3)। पूंजीगत वस्तुएं तथा खनन क्षेत्र में संकुचन, औद्योगिक क्षेत्र के समग्र कार्यानिष्पादन को निरंतर प्रभावित करता रहा। (चार्ट 1.5) वाष्पशील (वोलेटाइल) मर्दों के छोड़कर अप्रैल-

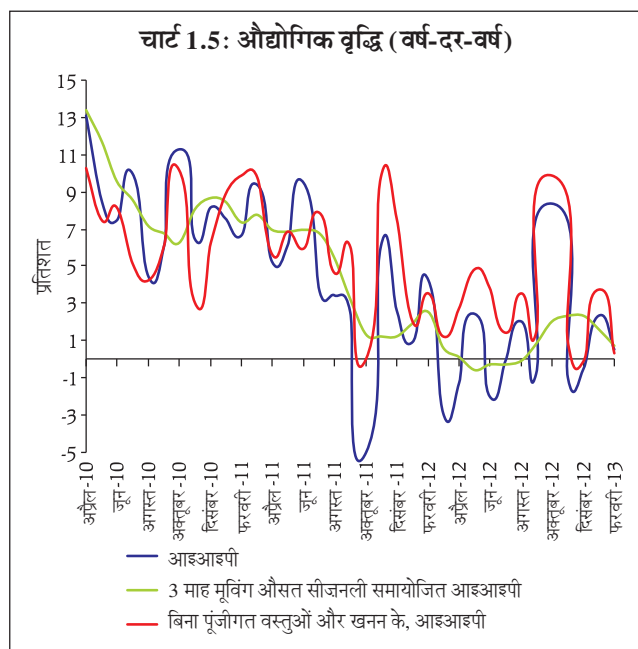
तालिका 1.3: औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक : उद्योगों का सेक्टरगत तथा प्रयोग आधारित वर्गीकरण

(प्रतिशत)

उद्योग समूह	आइआईपी में भार	वृद्धि दर			भारित योगदान#		
		अप्रैल-मार्च 2011-12	अप्रैल-फरवरी		अप्रैल-मार्च 2011-12	अप्रैल-फरवरी	
			2011-12	2012-13 पी		2011-12	2012-13 पी
1	2	3	4	5	6	7	8
क्षेत्रगत							
खनन	14.2	-2.0	-2.1	-2.5	-7.6	-6.6	-29.3
विनिर्माण	75.5	3.0	3.7	1.0	83.2	85.0	88.8
बिजली	10.3	8.2	8.7	4.0	24.3	21.5	41.1
प्रयोग आधारित							
बेसिक गुड्स	45.7	5.5	5.9	2.3	74.5	66.7	103.0
पूंजीगत वस्तुएं	8.8	-4.0	-1.8	-7.6	-20.4	-7.5	-117.6
मध्यवर्ती वस्तुएं	15.7	-0.6	-0.7	1.5	-3.0	-2.7	23.2
उपभोक्ता वस्तुएं (ए+बी)	29.8	4.4	4.7	2.5	48.6	43.3	91.6
ए) उपभोक्ता ड्युरेबलज	8.5	2.6	2.7	2.7	13.2	11.6	44.0
ब) उपभोक्ता गैर ड्युरेबलज	21.3	5.9	6.4	2.3	35.3	31.7	47.4
साधारण	100	2.9	3.5	0.9	100	100	100

पी: अनंतिम #: राउंडिंग ऑफ के कारण आंकड़ों का जोड़ 100 नहीं हो सकता है।

स्रोत: केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय।



फरवरी 2012-13 में रूंडित आईआईपी (आईआईपी की 96 प्रतिशत) वृद्धि 1.5 प्रतिशत है।

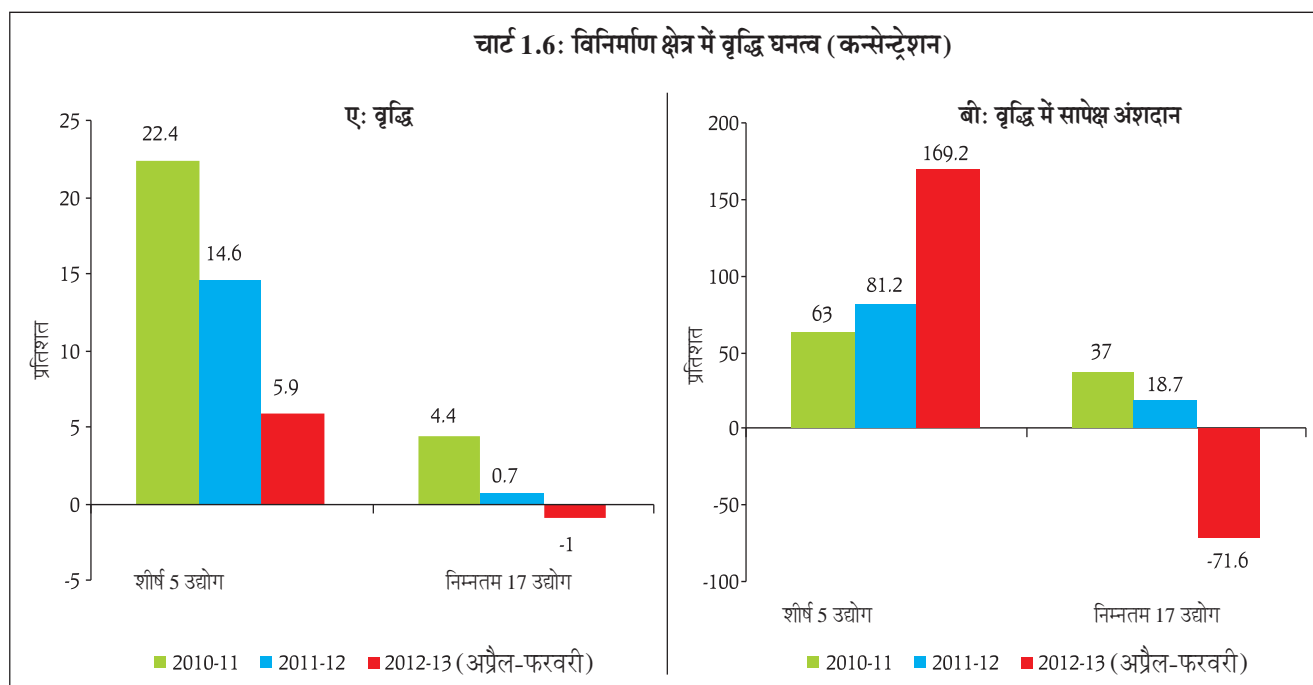
1.14 विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि काफी संकेंद्रित रही। 22 प्रमुख उद्योग समूहों में से 5 सबसे तेज बढ़ने वाले विनिर्माण उद्योगों का अप्रैल-फरवरी 2012-13 में विनिर्माण क्षेत्र की समग्र वृद्धि में लगभग 169 प्रतिशत का सर्वाधिक बड़ा योगदान रहा। (चार्ट 1.6)। निम्नतम 17 उद्योगों ने 72 प्रतिशत का नकारात्मक योगदान दिया। उन प्रमुख उद्योगों,

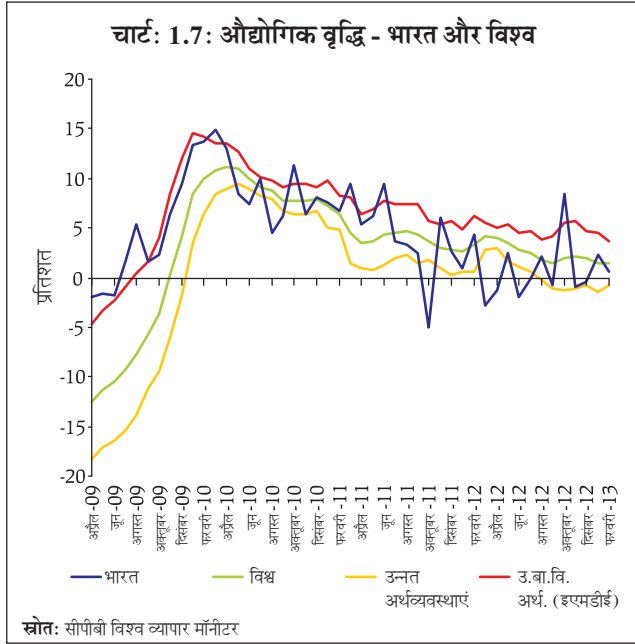
जिन्होंने उत्पादन में संकुचन दर्ज किया उनमें मोटर वाहन, इलेक्ट्रिकल मशीनरी तथा अपरेटस, मशीनरी तथा उपकरण और फ़ैब्रीकेटिड धातु उत्पाद शामिल है।

1.15 बिजली की कमी औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि में एक बड़ी कठिनाई रही। विद्युत निर्माण में 2012-13 में गिरावट आई और यह एक वर्ष पहले की 8.2 प्रतिशत से गिरकर 4.0 प्रतिशत रह गई। इस अवधि के दौरान बिजली की जरूरत और उपलब्धता के बीच अंतर बढ़कर 8.7 प्रतिशत हो गया। कोयले की आपूर्ति में कमी, क्षमता एडिशन में देरी और विलंब से आई थोड़ी बारिश ने बिजली के निर्माण की गति को धीमा कर दिया।

1.16 पूंजीगत वस्तुओं का उत्पादन भी सिकुड़ता रहा जिससे धीमा निवेश वातावरण परिलक्षित हुआ। आर्थिक गतिविधि तथा उपभोग मांग के परिणामस्वरूप उपभोक्ता वस्तुओं की वृद्धि में धीमापन आया।

1.17 घरेलू रुकावटों के अलावा, घरेलू औद्योगिक धीमेपन के लिए कमजोर वैश्विक वृद्धि भी उत्तरदायी थी क्योंकि घरेलू और वैश्विक आईआईपी के बीच मजबूत सह-संबंध होता है जो कि अप्रैल 2008 से फरवरी 2013 की अवधि के लिए 0.7 का सहसंबंध गुणांक सांख्यिकीय रूप से बहुत महत्वपूर्ण है (चार्ट 1.7)।





संरचनागत अवरोध मूल उद्योगों की वृद्धि को प्रभावित करते हैं

1.18 मूल उद्योगों के सामने कई आपूर्तिगत अवरोध होते हैं जैसे कोयले और प्राकृतिक गैस की कमी, कुछ राज्यों में खनन बंद होना और बड़ी योजनाओं के प्रारंभ होने में देरी। परिणामस्वरूप आठ मूल उद्योगों की वृद्धि अप्रैल-फरवरी 2012 के दौरान गिरकर 2.6 प्रतिशत रह गई जबकि पिछले वर्ष की तदनुसूची अवधि में यह वृद्धि 5.2 प्रतिशत थी। बिजली और स्टील के उत्पादन में तेज़ गिरावट आई (चार्ट

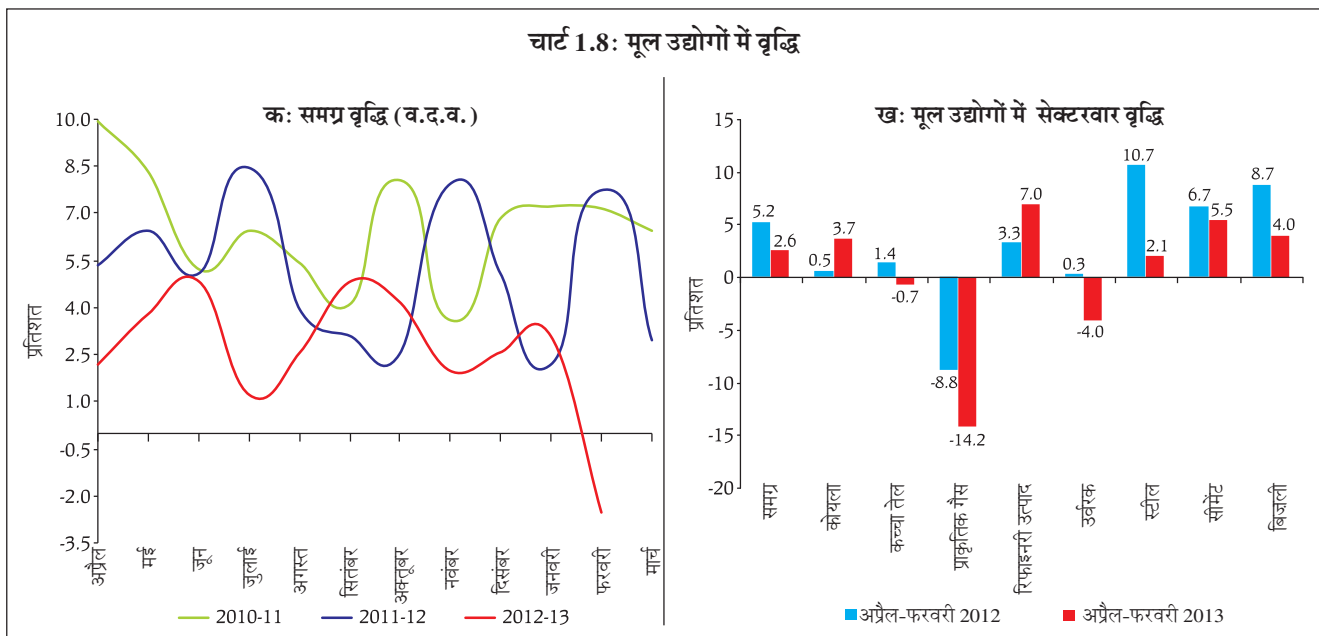
1.8)। औद्योगिक क्षेत्र में उठान मूल उद्योगों के कार्यनिष्पादन के मूर्त टर्न अराउंड पर निर्भर है।

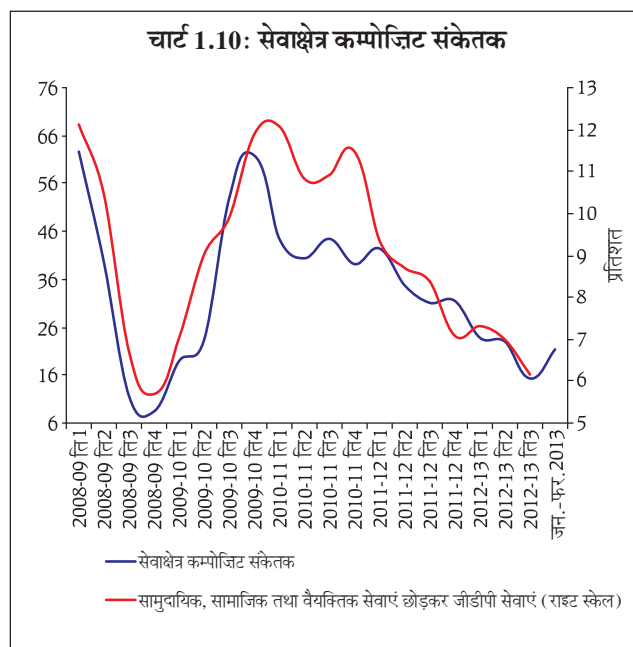
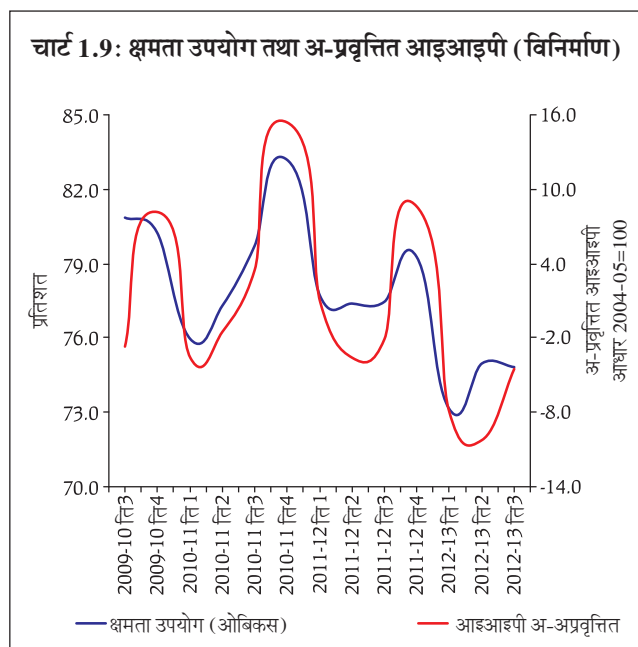
क्षमता उपयोग सपाट रहा

1.19 रिज़र्व बैंक के ऑर्डर बुक्स, इन्वैन्ट्रीज तथा क्षमता उपयोग सर्वेक्षण के बीसवें राउंड (ओबिकस) द्वारा मापित क्षमता उपयोग, 2012-13 की तीसरी तिमाही के दौरान लगभग पिछली तिमाही के स्तर पर ही रहा (<http://www.rbi.org.in/OBIC US 20>)। क्षमता उपयोग तथा अ-प्रवृत्तिगत आइआइपी-विनिर्माण के बीच एक व्यापक सह-संबंध है (चार्ट 1.9)। पिछली दो तिमाहियों में लगातार कम रहने के बाद 2012-13 की तीसरी तिमाही में नए ऑर्डर्स थोड़े बढ़े, तथापि इसकी वृद्धि पिछले वर्ष की तदनुसूची तिमाही के मुकाबले कम रही। तैयार वस्तु माल सूची से बिक्री अनुपात, गत पांच तिमाहियों में, अपने सबसे नीचे के स्तर पर पहुंच गया जबकि कच्चे माल की मालसूची से बिक्री अनुपात पांच तिमाहियों में अपने उच्चतम स्तर पर पहुंचा।

सेवाक्षेत्र की वृद्धि में धीमापन दिखा

1.20 घरेलू खपत में धीमेपन तथा उसके साथ कमजोर वैश्विक वृद्धि ने सेवा क्षेत्र के कार्यनिष्पादन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। सेवा क्षेत्र गतिविधि के कई संकेतक अप्रैल-फरवरी 2012-13 के दौरान अपनी गतिविधि में धीमापन प्रदर्शित करते हैं (तालिका 1.4)। कन्स्ट्रक्शन, व्यापार तथा ट्रांसपोर्ट और वित्त के संकेतकों में वृद्धि पर





आधारित रिजर्व बैंक के सेवा क्षेत्र कम्पोजिट संकेतक ने 2012-13 की तीसरी तिमाही में सेवाओं में धीमेपन की निरंतरता प्रदर्शित की, मगर जनवरी-फरवरी 2013 के दौरान थोड़ा सुधार भी इंगित किया (चार्ट 1.10)।

अप्रैल-दिसंबर 2012-13 के दौरान रोजगार परिदृश्य कमजोर बना रहा

1.21 2012-13 की चौथी तिमाही के दौरान शुरू हुआ “कमजोर-रोजगार-परिदृश्य” अभी भी बना हुआ है। श्रम ब्यूरो सर्वे के अनुसार 2012-13 (अप्रैल-दिसंबर) के दौरान 8 प्रमुख क्षेत्रों में रोजगार निर्माण पिछले साल की तदनुरूपी अवधि की तुलना में, 68 प्रतिशत गिरा जिसका प्रमुख कारण था आईटी/बीपीओ क्षेत्र, जो कि संगठित क्षेत्र में रोजगार निर्माण के प्रमुख योगदानकर्ताओं में से एक है। टैक्सटाइल्स

तालिका 1.4: सेवा क्षेत्र गतिविधि के संकेतक

(वृद्धि प्रतिशत में)

सेवा क्षेत्र संकेतक	2010-11	2011-12	2012-13
पर्यटक आगमन	10.0	9.7	2.9
सीमेंट	4.5	6.7*	5.5*
स्टील	13.2	10.7*	2.1*
ऑटोमोबाइल बिक्री	16.8	11.1	2.6
रेलवे राजस्व अर्जन फ्रेट ट्रैफिक	3.8	5.2	4.1
प्रमुख पोर्ट्स पर हैंडल किया कार्गो सिविल एविएशन	1.5	-1.5	-2.6
घरेलू कार्गो ट्रैफिक	23.8	-4.9*	-3.0*
अंतर्राष्ट्रीय कार्गो ट्रैफिक	17.7	-1.3*	-4.7*
अंतर्राष्ट्रीय यात्री ट्रैफिक	10.3	7.5*	4.8*
घरेलू यात्री ट्रैफिक	18.1	16.7*	-5.2*

टिप्पणी : *: आंकड़े अप्रैल-फरवरी से संबंधित हैं।

स्रोत : सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, प्रैस सूचना ब्यूरो, भारतीय पोर्ट्स एसोसिएशन, एसआइएएम तथा सीएमआई।

तालिका 1.5: रोजगार में परिवर्तन

(मिलियन)

उद्योग/समूह	2010-11	2011-12	2011-12 (अप्रैल-दिसंबर)	2012-13 (अप्रैल-दिसंबर)
1	2	3	4	5
अपेरल सहित टेक्सटाइल्स	0.10	0.09	0.09	0.10
चमड़ा	0.03	-0.02	-0.01	0.01
धातुएं	0.09	0.08	0.09	0.03
ऑटोमोबील्स	0.11	0.03	0.03	0.01
जेम्स एण्ड ज्यूलीरी	0.00	0.03	0.03	0.00
परिवहन	0.00	0.04	0.02	0.00
आईटी/बीपीओ	0.67	0.58	0.48	0.09
हैण्डलूम/पावरलूम	-0.01	0.00	0.02	0.00
समग्र	0.98	0.84	0.76	0.24

स्रोत: रोजगार सर्वेक्षण, श्रम ब्यूरो

तथा चमड़े को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रों ने, रोजगार निर्माण की दर में गिरावट दिखाई है (तालिका 1.5)।

2012-13 की चौथी तिमाही में वृद्धि कम ही रही होगी मगर 2013-14 में भी, बहाली, आपूर्ति रुकावटें दूर करने पर ही निर्भर होगी

1.22 उद्योग में कमजोर कार्यनिष्पादन जारी रहने और सेवाओं में धीमेपन के साक्ष्य को देखते हुए 2012-13 की चौथी तिमाही में वृद्धि धीमी ही रहेगी। इसके अतिरिक्त मूल उद्योगों में वृद्धि को फिर से वापस लाने के लिए सरकार को पर्यावरणीय क्लियरेंस में तेजी लाने और भू-अधिग्रहण को तेज करने की जरूरत होगी।

1.23 इन्फ्रास्ट्रक्चर्स से संबंधित रुकावटों के समाधान की जरूरत है। रिजर्व बैंक ने अपनी ओर से हाल ही में इन्फ्रास्ट्रक्चरल वित्त कंपनियों के लिए बाह्य वाणिज्यिक उधारों के मानदंडों में छूट प्रदान की है और शर्तों के अधीन सरकारी निजी सहभागिता (पीपीपी) परियोजनाओं के लिए दिए जाने वाले बैंक ऋण को प्रतिभूत वित्त मानने संबंधी मानदंडों को शिथिल किया है। वैश्विक मंच पर यूरो क्षेत्र में सार्थक बहाली आने में अभी कुछ और समय लगने की आशा है। इस वातावरण में भारत में वृद्धि 2013-14 में लगातार तीसरे वर्ष, संभाव्यता से कम रहने की आशा है।